भूगोल

दसवीं कक्षा

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता–पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

भारत एवं ब्राज़ील के विभिन्न प्राणी एवं वनस्पतियाँ

बरगद

मकाऊ

बबूल

घड़ियाल

सुंदरी के वन

मगरमच्छ

आर्किड

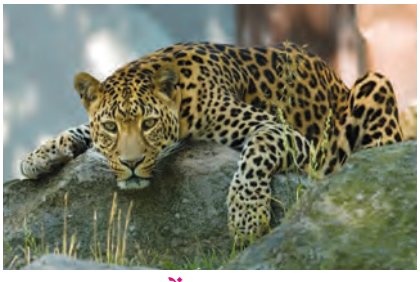

तेंदुआ

राजहंस (मराल)

सिंह

बारहसिंघा

प्युमा

शीशम

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया ।
दि.२९.१२.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में सन २०१८-१९ यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई ।

भूगोल

दसवीं कक्षा

RZAFST

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

प्रथमावृत्ति : २०१८
तीसरा पुनर्मुद्रण : २०२१

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४११००४.
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडल के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडल के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

भूगोल विषय समिति :
डॉ. एन. जे. पवार, अध्यक्ष
डॉ. सुरेश जोग, सदस्य
डॉ. रजनी माणिकराव देशमुख, सदस्य
श्री सचिन परशुराम आहेर, सदस्य
श्री गौरीशंकर दत्तात्रय खोबरे, सदस्य
श्री र. ज. जाधव, सदस्य-सचिव

भूगोल अभ्यास समूह :
डॉ. हेमंत मंगेशराव पेडणेकर
डॉ. कल्पना प्रभाकरराव देशमुख
डॉ. सुरेश गेणूराव साळवे
डॉ. सावन माणिकराव देशमुख
श्रीमती समृद्धि मिलिंद पटवर्धन
डॉ. संतोष विश्वास नेवसे
डॉ. हणमंत लक्ष्मण नारायणकर
श्री संजयकुमार गणपत जोशी
श्री पुंडलिक दत्तात्रय नलावडे
श्री पोवार बाबुराव श्रीपती
श्री अतुल दीनानाथ कुलकर्णी
श्रीमती कल्पना विश्वास माने
श्रीपदमाकर प्रल्हादराव कुलकर्णी
श्री संजय श्रीराम पैठणे
श्री श्रीराम रघुनाथ वैजापूरकर
श्री ओमप्रकाश रतन थेटे
श्री शांताराम नथ्थू पाटील
श्री सागर राजू ससाणे
श्री रामेश्वर सदाशिवराव चरपे
श्री गुलज़ार फकिरमोहम्मद मनियार
श्रीमती शोभा सुभाष नांगरे
श्रीमती मंगला गुडे विश्वेकर

चित्रकार : श्री भटू रामदास बागले
मुखपृष्ठ एवं सजावट : श्री भटू रामदास बागले
मानचित्रकार : श्री रविकिरण जाधव
अक्षरांकन : मुद्रा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे.
भाषांतरकार : श्रीमती समृद्धि मिलिंद पटवर्धन
समीक्षक : डॉ. पद्मजा घोरपड़े
भाषांतर समन्वयक : श्री रविकिरण जाधव
कागज : ७० जी.एस.एम. क्रीमवोव्ह
मुद्रणादेश : एन्/पिबी/२०२१-२२/(१२,०००)
मुद्रक : मे. किंग ऑफ किंग्स् प्रिंटर्स प्रा. लि., भिवंडी

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री विनोद गावडे, निर्मिति अधिकारी
श्रीमती मिताली शितप, सहायक निर्मिति अधिकारी

प्रकाशक
श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ,
प्रभादेवी, मुंबई-२५.

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थी मित्रों,

दसवीं कक्षा में आपका स्वागत है। आपने भूगोल विषय कक्षा तीसरी से कक्षा पाँचवीं तक 'परिसर अभ्यास' और कक्षा छठी से नौवीं तक भूगोल की पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से पढ़ा है। दसवीं कक्षा के लिए भूगोल की यह नवीन पाठ्यपुस्तक आपके हाथों में देते हुए मुझे असीम प्रसन्नता हो रही है।

आपके आस-पास अनेक घटनाएँ होती रहती हैं। आपको सभी ओर से घेरने वाली प्रकृति, सूर्य-प्रकाश, वर्षा और ठंड के रूप में आप को दर्शन देती रहती है । शरीर को छूनेवाला हवा का झोंका भी आपको सुखद लगता है। ऐसी अनेक प्राकृतिक घटनाओं का स्पष्टीकरण भूगोल विषय के अध्ययन से प्राप्त होता है। भूगोल सदैव हमें प्रकृति की ओर ले जाने का प्रयत्न करता है। भूगोल में सजीवों और प्रकृति के बीच होनेवाली अंतरक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

इस विषय के माध्यम से आपने पृथ्वी से संबंधित अनेक बुनियादी संकल्पनाओं को सीखा है। आपके दैनंदिन जीवन से संबंधित अनेक घटकों से आप इस विषय के द्‌वारा अवगत हुए हैं। इसका आपको भविष्य में अवश्य ही उपयोग होगा। इस विषय के माध्यम से हमने आर्थिक,सामाजिक, सांस्कृतिक अंतरक्रियाओं का भी अध्ययन किया है।

यह विषय सीखने के लिए निरीक्षण, आकलन, विश्लेषण, आलोचनात्मक चिंतन जैसे कौशल महत्त्वपूर्ण हैं। उनका सदैव उपयोग करें, विकसित करें। मानचित्र, आलेख, रेखा-चित्र, जानकारी, तालिकाएँ आदि इस विषय के अध्ययन के साधन हैं। उनके प्रयोग का अभ्यास करें। इस पाठ्यपुस्तक के माध्यम से आपको यह अवसर दिया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक का स्वरूप कक्षा नौवीं तक सिखाए गए संकल्पनाओं का सिंहावलोकन करना है। यह सिंहावलोकन करने के पहले पूर्व की पाठ्यपुस्तकों का अवलोकन आपको अवश्य उपयोगी होगा। उन्हें भूलना नहीं। इस पाठ्यपुस्तक में भारत और ब्राज़ील की विशेषताओं का तुलनात्मक प्रस्तुतिकरण किया गया है। यह आपको निश्चित ही पसंद आएगा।

आपकी प्रतिक्रियाओं का हम सदैव सकारात्मक रूप से स्वागत करते हैं । उन्हें अवश्य भेजिएगा।

आप सभी को मनःपूर्वक शुभकामनाएँ !

स्थान : पुणे

दिनांक : १८ मार्च २०१८, गुढ़ीपाड़वा

भारतीय सौर दिनांक : २७ फाल्गुन १९३९

(डॉ. सुनिल मगर)

संचालक

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व

अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

क्षमता विवरण

अ.क्र.	क्षेत्र	घटक	क्षमताएँ
१.	सामान्य भूगोल	१.१ स्थान एवं विस्तार	• विशिष्ट प्रदेश संबंधी जानकारियों का संकलन करना एवं तुलना करना । • भौगोलिक जानकारी के आधार पर अथवा उससे संबंधित विभिन्न प्रश्न पूछना । • मानचित्र एवं प्रारूपों पर रेखाजाल की सहायता से किसी प्रदेश के स्थान एवं विस्तार से संबंधित उत्तर देना ।
२.	प्राकृतिक भूगोल	२.१ प्राकृतिक रचना	• किसी प्रदेश के संदर्भ में भौगोलिक जानकारी के माध्यम से अनुमान लगाना। • किसी प्रदेश एवं उसके आस-पास के प्रदेश के प्राकृतिक घटकों में साम्य व भेद स्पष्ट करना । • भौगोलिक संदर्भ से संबंधित तुलना के पश्चात उस पर आधारित विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देना। • कोई प्रदेश अन्य प्रदेशों से किन कारणों से अलग दिखता है इसका पता लगाना।
		२.२ जलवायु	• भौगोलिक अनुमानों हेतु प्रदेशों के संदर्भ में भौगोलिक जानकारी संकलित करना । • अन्य प्रदेशों की तुलना में किसी विशिष्ट प्रदेश के विषय में प्रश्न तयार करना एवं उत्तरों को ढूँढना ।
		२.३ अपवाह तंत्र	• अपवाह तंत्र एवं प्राकृतिक रचना के संबंधों पर टिप्पणी लिखना ।
		२.४ प्राकृतिक वनस्पतियाँ एवं प्राणी	• विभिन्न प्रदेशों के प्रारूपों का वर्गीकरण एवं परीक्षण करना । • पर्यावरणीय समस्याओं को समझकर उन के निराकरण के उपाय सुझाना । • किसी प्रदेश में प्राकृतिक वनस्पतियों एवं प्राणियों के अधिवास के कारणों की मीमांसा करना ।
३.	मानवीय भूगोल	३.१ जनसंख्या	• 'जनसंख्या' इस मद का मापन करना एवं उसकी प्रवृत्तियों में होनेवाले बदलावों का परीक्षण करना । • मानवीय जनसंख्या के अंतरसंबंधों, सहयोग और संघर्षों पर आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक प्रक्रियाओं के प्रभाव का परीक्षण करना । • स्थानिक एवं विभागीय जनसमुदायों के विकास पर परिणाम करनेवाले कारकों को बताना । • स्थानांतरण से संबंधित चल (variable) कारकों की मीमांसा करना । • कोई प्रदेश अन्य प्रदेशों से किस प्रकार अलग है, यह ढूँढना ।
		३.२ मानवीय अधिवास	• यह बताना कि पर्यावरणीय बदलावों के कारण कुछ स्थानों पर विकास तो कुछ स्थानों पर समस्याओं का निर्माण होता है । • अधिवासों के प्रारूपों एवं भौगोलिक पर्यावरण का परीक्षण कर सह-संबंध बताना। • सांस्कृतिक प्रारूपों, प्राकृतिक तंत्रों एवं व आर्थिक परस्परावलंबन के संदर्भ में आकलन करना ।
		३.३ भूमि उपयोग	• संसाधनों के उपयोग से संबंधित अद्यतन नीतियों एवं कार्यक्रमों के संदर्भ पर टिप्पणी लिखना । • भूमि उपयोग का भविष्य में अनुमान लगाना एवं उससे संबंधित निष्कर्षों पर आना । • किसी प्रदेश एवं उसके आस-पास के प्रदेश के प्राकृतिक भूगोल के संदर्भ में साम्य एवं भेद स्पष्ट करना एवं उपयोगिता बताना ।
		३.४ व्यवसाय	• आर्थिक परस्परावलंबन के प्रारूपों (Pattern) एवं अंतरसंबंधों को पहचानना । • यह बताना कि मानवीय क्रियाओं पर किन प्राकृतिक कारकों का प्रभाव पड़ता है । • किसी प्रदेश के प्राकृतिक पर्यावरण का वहाँ की अर्थव्यवस्था, संस्कृति एवं व्यापार पर होने वाले परिणामों को स्पष्ट करना । • कोई प्रदेश अन्य प्रदेशों से भिन्न होने के कारण ढूँढ़ना ।
		३.५ परिवहन एवं संचार	• यह बताना कि माल, सेवा एवं प्रौद्योगिकी के कारण किसी प्रदेश में विभिन्न स्थान एक -दूसरे से जुड़ते हैं । • यह जानना कि आदान-प्रदान, सहसंबंध, लेन-देन का संबंध मानवीय संचार से संबद्ध है । • मानचित्र का वाचन कर अनुमान लगाना और निष्कर्ष निकालना ।
४.	प्रायोगिक भूगोल	**क्षेत्र -अध्ययन**	• अन्य प्रदेशों के संदर्भ में किसी विशिष्ट प्रदेश के विषय में प्रश्न तयार करना एवं उत्तर ढूँढ़ना । • भौगोलिक साधनों का उपयोग कर प्रश्नों के उत्तर देना । • प्राप्त की हुई जानकारी का प्रस्तुतिकरण करना ।

– शिक्षकों के लिए –

- ✓ सबसे पहले स्वयं पाठ्यपुस्तक को समझें ।
- ✓ इस पाठ्यपुस्तक से पढ़ाने के पहले पिछली कक्षाओं की सभी पाठ्यपुस्तकों से संदर्भ लें।
- ✓ प्रत्येक पाठ में दी गई कृति के लिए ध्यानपूर्वक और स्वतंत्र नियोजन करें । नियोजन के अभाव में पाठ का अध्यापन करना उचित नहीं होगा ।
- ✓ अध्ययन-अध्यापन में 'अंतरक्रिया' 'प्रक्रिया' 'सभी विद्यार्थियों का प्रतिभाग' तथा 'आपका सक्रिय मार्गदर्शन' जैसे घटक अति आवश्यक हैं ।
- ✓ विषय का उचित पद्धति से आकलन होने हेतु विद्यालय में उपलब्ध भौगोलिक साधनों का आवश्यकतानुसार उपयोग करना समीचीन होगा । इस दृष्टि से विद्यालय में उपलब्ध पृथ्वी भूगोलक, विश्व, भारत, राज्यों के मानचित्र, मानचित्र पुस्तिका का उपयोग करना अनिवार्य है; इसे ध्यान में रखें ।
- ✓ यद्यपि पाठों की संख्या सीमित रखी गई है फिर भी प्रत्येक पाठ के लिए कितने कालांश लगेंगे; इसका विचार किया गया है । अवधारणाएँ अमूर्त होती हैं । अत: वे दुर्बोधपूर्ण और क्लिष्ट होती हैं । इसीलिए अनुक्रमणिका में कालांशों का जिस प्रकार उल्लेख किया गया है; उसका अनुसरण करें । पाठ को संक्षेप में निपटाने का प्रयास न करें । इससे विद्यार्थियों को भूगोल विषय लदा हुआ बौद्धिक बोझ नहीं लगेगा बल्कि विषय को आत्मसात करने में सहायता प्राप्त होगी ।
- ✓ अन्य समाज विज्ञानों की भाँति भूगोल की अवधारणाएँ सहजता से समझ में नहीं आतीं । भूगोल की अधिकांश अवधारणाएँ वैज्ञानिक निकषों और अमूर्त घटकों पर निर्भर करती हैं । इन निकषों/घटकों को समूह कार्य में और एक-दूसरे के सहयोग से सीखने के लिए प्रोत्साहन दें । इसके लिए कक्षा की संरचना में परिवर्तन करें । कक्षा का ढाँचा ऐसा बनाएँ कि विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए अधिकाधिक अवसर मिलेगा ।
- ✓ सांख्यिकीय आंकड़ों पर प्रश्न न पूछें। उसके स्थान पर सांख्यिकीय आंकड़ों की प्रवृत्तियों अथवा प्रारूपों पर टिप्पणी लिखने के लिए कहें।
- ✓ प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक रचनात्मक पद्धति एवं कृतियुक्त अध्यापन के लिए तैयार की गई है ।
- ✗ प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के पाठ कक्षा में केवल पढ़कर न पढ़ाएँ ।
- ✓ संबोधों की क्रमिकता को ध्यान में लें तो पाठों को अनुक्रमणिका के अनुसार पढ़ाना विषय के सुयोग्य ज्ञान निर्माण की दृष्टि से उचित होगा ।
- ✓ 'क्या आप जानते हैं?' इस चौखट पर मूल्यांकन हेतु विचार न करें ।
- ✓ पाठ्यपुस्तक में दिए गए 'क्यू आर कोड' का उपयोग करें। अपेक्षा यह की जाती है कि आप स्वयं और विद्यार्थी इस संदर्भ का उपयोग करेंगे । इस संदर्भ सामग्री के आधार पर आपको पाठ्यपुस्तक के दायरे के बाहर जाने में निश्चित रूप से सहायता प्राप्त होगी । इस विषय को गहराई से समझने के लिए विषय का अतिरिक्त पठन/वाचन सदैव ही उपयोगी सिद्ध होता है; यह ध्यान में रखें ।
- ✓ मूल्यांकन के लिए कृतिप्रधान, मुक्तोत्तरी, बहुवैकल्पिक, विचारप्रवर्तक प्रश्नों का उपयोग करें । इसके कुछ नमूने पाठों के अंत में स्वाध्यायों में दिए गए है ।
- ✓ पृष्ठ क्र. ३५ और ६० पर मानचित्र प्रारूपों का उपयोग फोटो कापी हेतु करें।

दसवीं की इस पाठ्यपुस्तक को तैयार करते समय तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता पर ध्यान दिया गया है । यह निश्चित किया गया कि इस पाठ्यपुस्तक में न्यूनतम दो प्रदेश हों एवं देश के अंतर्गत प्रादेशिक तुलना से बचा जाय । जब देशों का विचार किया गया तो यह तो निश्चित था कि एक देश भारत होगा पर दूसरा देश कौन-सा हो , इस पर बहुत विचार-विमर्श हुआ। उसके लिए निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया।

- वह देश बहुत विकसित अथवा बहुत अविकसित न हो।
- वह भिन्न गोलार्ध में स्थित हो।
- वह एक ही महाद्वीप का न हो ।
- भारत से काफी समानताएँ हों किंतु फिर भी भिन्न ढांचे का हो ।
- भारत की भाँति सांस्कृतिक व प्राकृतिक विविधता से परिपूर्ण हो ।
- भारत के साथ-साथ कम-से-कम किसी एक अंतरराष्ट्रीय संगठन का सदस्य हो।
- भारत की तरह सागरीय तट हो।
- भारत की तरह गणराज्य हो ।
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में भी कुछ समानताएँ हों ।
- कक्षा नौवीं तक सिखाई गई संकल्पनाओं का उपयोजन दोनों देशों के लिए एक ही स्तर पर करना संभव हो ।
- अध्ययन के दौरान दोनों देशों की तुलना करते समय भारत के प्रति आदर बढ़े ।

सभी बिंदुओं के आधार पर ब्राज़ील देश का चयन किया गया है। भौगोलिक संकल्पनाओं का उपयोजन एक ही प्रदेश पर लागू करने से उसमें रंजकता नहीं रहती। इसीलिए प्रादेशिक विविधता, समानताएँ- भेद आदि बिंदुओं पर व्यापक परीक्षण कर अध्ययन करना आवश्यक होता है। भूगोल विषय की विशेषता इसी में है। इसीलिए ऐसी आशा है कि भारत के साथ ब्राज़ील का चयन इस वर्ष के अध्ययन हेतु सार्थक सिद्ध होगा ।